بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 17.11.2017 मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूँ, हक़ यही है कि जो मुझे छोड़ेगा तथा मुझे झुठलाएगा, वह ज़बान से न करे किन्तु अपने कर्म के द्वारा उसने पूरे क़ुर्आन को झुठला दिया तथा ख़ुदा को छोड़ दिया

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक शेअर में फ़रमाते हैं कि

वक़्त था वक़्त मसीहा न किसी और का वक़्त मैं न आता तो कोई और ही आया होता

वह ज़माना जिसमें से उस समय मुसलमान गुज़र रहे थे, दर्द रखने वाले मुसलमानों के लिए बड़ा व्याकुल करने वाला ज़माना था। लाखों मुसलमान ईसाई हो गए थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनानुसार ऐसी दशा हो गई थी कि ईमान सुरय्या पर जा चुका था। व्यवहारिक रूप से न मुसलमानों में दीन शेष रहा था, न इस्लाम की वास्तविकता शेष रही थी। इस्लाम का दर्द रखने वाले इस प्रतीक्षा में थे कि कोई मसीहा आए तथा इस्लाम की इस डौलती नाव को संभाले। उनमें से एक बुज़ुर्ग हज़रत सूफ़ी अहमद जान साहब लुधियानवी भी थे। उनकी ख्याति बड़ी बड़ी दूर दूर तक थी, बहुत से उनके मुरीद थे। उनकी बुज़ुर्गी के कारण एक बार महाराजा जम्मू ने उनको आमन्त्रित करके कहा कि आप जम्मू आकर मेरे लिए दुआ करें परन्तु आपने इंकार कर दिया और कहा कि यदि दुआ करानी है तो मेरे पास आकर कराओ। सांराश यह है कि बड़े बड़े लोग उनके मुरीद थे। हज़रत सूफ़ी अहमद जान साहब को आरम्भ से ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बड़ी श्रद्धा थी। उस समय जब अभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नबुव्वत का दावा नहीं किया था, दावे से पहले ही उनका निधन हो गया। उन्होंने उस समय परिस्थितियों तथा ज़माने को देखते हुए एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से निवेदन किया था कि

हम मरीज़ों की है तुम्हीं पे निगाह तुम मसीहा बनो ख़ुदा के लिए

अतः जैसा कि मैंने कहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे से पहले उनका निधन हो गया था किन्तु उनको यह विश्वास था कि आप ही ज़माने के इमाम और मसीह मौऊद हैं। इस लिए उन्होंने अपनी संतान को, अपने मुरीदों को यह नसीहत की थी कि जब भी दावा होगा तुम मान लेना। अतः दिव्यात्मा पुरुष जानते थे कि इस्लाम की इस डौलती नाव को यदि इस ज़माने में कोई संभाल सकता है तो वे हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम हैं क्यूँकि आपने बराहीन-ए-अहमदिय्या लिखकर इस्लाम के विरोधियों के मुंह बन्द कर दिए थे। जब तक आपने दावा नहीं किया बड़े बड़े उलमा आपकी इस बात से विश्वस्त थे। किन्तु जब अल्लाह तआला के निर्देश से आपने दावा किया तो यही आलिम अपने निजी स्वार्थ के कारण आपका विरोध भी करने लग गए और आज तक यही स्वार्थी उलमा हैं जो आपका विरोध कर रहे हैं तथा सामान्य मुसलमानों के दिलों में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपकी जमाअत के विरुद्ध घृणा उत्पन्न कर रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी असंख्य लेखों एवं भाषणों में अपने दावे की सत्यता के प्रमाण दिए। ज़माने की आवश्यकतानुसार मसीह मौऊद के आने और अल्लाह तआला के समर्थन, आपके विषय में होने के बारे में बताया। जो स्वच्छ मन के लोग थे उनको तो समझ आ गई तथा जिनके दिलों में द्वेष था, स्वार्थ था उनको समझ नहीं आई।

फ़रमाया- इस समय मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में ही कुछ प्रमाण बयान करुंगा जो आपने बयान फ़रमाए हैं। आप फ़रमाते हैं कि-

अब कोई हमारे दावे को छोड़े और अलग रहने दे परन्तु इन बातों को सोच कर जवाब दे कि मुझे झुठलाओगे तो तुम्हें इस्लाम को हाथ से खो देना पड़ेगा। किन्तु मैं सच कहता हूँ कि क़ुर्आन शरीफ़ के वादों के अनुसार अल्लाह तआला ने अपने दीन रक्षा फ़रमाई है तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणी पूरी हुई क्यूँकि ठीक समय पर आवश्यतानुसार ख़ुदा तआला के वादों के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शुभ सूचना के अनुसार ख़ुदा तआला ने यह सिलसिला क़ायम किया तथा यह प्रमाणित हो गया कि सदक़ल्लाहु व रसूलुहू अर्थात अल्लाह तआला और उसके रसूल की बातें सच्ची हैं। अत्याचारी प्रकृति का वह इंसान है जो इन बातों को झुठलाता है।

आपने 1903 में यह बयान फ़रमाया कि मेरे दावे को 22 वर्ष बीत चुके हैं और अल्लाह तआला के समर्थन मेरे साथ हैं। यदि मैं झूठा हूँ तो फिर समर्थन क्यूँ हैं अल्लाह तआला के मेरे साथ। दूसरे आपने फ़रमाया कि ज़माने को आवश्यकता है और सब इस बात को स्वीकार करते हैं कि इस ज़माने में मसीह ने आना था और जब आवश्यकता है तो यदि मैं नहीं तो कोई दूसरा पेश करो। इस प्रकार कोई सुधारक आना चाहिए मुसलमानों के सुधार के लिए। क्यूँकि ज़माने में अत्यधिक उपद्रव हो गया है तथा मुसलमानों में भी फ़साद अपनी चरम सीमा तक पहुंचा हुआ है। अतः यदि मुझे झूठा कहना है तो इसकी दो ही अवस्थाएँ होंगी। या तो कोई दूसरा सुधारक पेश करो, क्यूँकि ज़माना चाहता है कि कोई सुधारक आए। या अल्लाह तआला के वादों को झुठलाओ, कहो कि झूठे थे सारे वादे कि ऐसे बिगड़े हुए हालात में किसी सुधारक को भेजने का जो वादा था, वह ग़लत था। आपने फ़रमाया कि दीन की सुरक्षा की आवश्यकता हर हाल में है। फ़रमाया कि कुछ लोग ऐसे देखे जाते हैं जो कहते हैं कि सुरक्षा की कोई आवश्यकता नहीं, वे बड़ी भूल करते हैं।

इस प्रकार की बातें वे लोग कर सकते हैं जिनको या तो इस्लाम से दूर का भी सम्बंध और दर्द नहीं है और या वे लोग जिन्होंने हुजरों के अंधेरे में जीवन बिताया है और उनको बाहर की दुनिया की कुछ ख़बर नहीं है। अतः इस प्रकार यदि लोग हैं तो उनकी कोई चिंता नहीं। हाँ, वे लोग जिनके दिलों में नूर है, जिनको इस्लाम के साथ सम्बंध और दर्द है तथा ज़माने के परिस्थितयों से अवगत हैं, उनको मानना पड़ता है कि यह समय किसी महामान्य सुधारक का समय है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यदि मेरा इंकार करते हो, मुझे झुठलाते हो तो तुम वास्तव में अल्लाह तआला और उसके रसूल को झूठला रहे हो। आप फ़रमाते हैं कि मेरा इंकार, मेरा इंकार नहीं है बल्कि यह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इंकार है। क्यूँकि जो मुझे झुठलाता है, वह मुझे झुठलाकर मआज़ल्लाह अल्लाह तआला को झूठलाता देता है जबकि वह देखता है कि भीतरी व बाहरी फ़साद अत्यधिक हो गए हैं तथा ख़ुदा तआला ने इस वादे के बावजूद कि إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ इनके सुधार का कोई प्रबन्ध नहीं किया, जबकि वह इस बात पर प्रत्यक्ष रूप से ईमान लाता है कि ख़ुदा तआला ने इस्तख़लाफ़ वाली आयत में वादा किया था कि मूसा अलै. के सिलसिले की भांति इस मुहम्मदी सिलसिले में भी ख़लफ़ा की श्रंखला स्थापित करेगा किन्तु उसने मआज़ल्लाह इस वादे को पूरा नहीं किया तथा इस समय कोई ख़लीफ़ा इस उम्मत में नहीं और न केवल यहाँ तक ही, बल्कि इस बात से भी इंकार करना पड़ेगा कि क़ुर्आन शरीफ़ ने जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मूसा की उपमा फ़रमाया है, यह भी उचित नहीं है, मआज़ल्लाह। क्यूँकि उस सिलसिले की पूरी उपमा के लिए अनिवार्य था कि इस चौधवीं शताब्दी के सिरे पर इसी उम्मत में से एक मसीह पैदा होता, उसी प्रकार से जैसे कि मूसवी सिलसिले में चौधवीं शताब्दी पर एक मसीह आया और इसी प्रकार से क़ुर्आन शरीफ़ की इस आयत को भी झूठलाना पड़ेगा कि وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ۔ में एक आने वाले अहमदी की छवि की सूचना देती है तथा इसी प्रकार से क़ुर्आन शरीफ़ की अनेक आयतें हैं जिनको झुठलाना अनिवार्य होगा। फ़रमाया- फिर सोचो कि क्या मुझे झुठलाना कोई सरल बात है, यह मैं अपने आप नहीं कहता, ख़ुदा तआला की शपथ लेकर कहता हूँ कि सत्य यही है कि जो मुझे छोड़ेगा और मुझे झुठलाएगा चाहे वह ज़बान से न करे परन्तु अपने कर्म से, उसने सारे क़ुर्आन को झुठला दिया और ख़ुदा को छोड़ दिया।

फिर आप फ़रमाते हैं कि मुझे झुठलाना केवल मुझे झुठलाना नहीं, यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाना है। अब कोई इससे पहले कि मुझे झुठलाए और इंकार का साहस करे तनिक अपने मन में सोचे तथा उससे फ़त्वा ले कि वह किसको झुठलाता है।

फिर इस बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए कि आपको झुठलाने से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्यूँ इंकार होता है आप फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो वादा किया था कि प्रत्येक शताब्दी पर मुजद्दिद आएगा, वह मआज़ल्लाह, झूठा निकला। फिर आपने जो इमामुकुम मिनकुम फ़रमाया था, वह भी मआज़ल्लाह झूठा निकला और आपने जो सलीबी कठिनाई के समय एक मसीह व महदी के आने की शुभ सूचना दी थी वह भी मआज़ल्लाह ग़लत निकली, क्यूँकि जटिल अवस्था तो आ गई परन्तु वह आने वाला इमाम नहीं आया। अब इन बातों को जब कोई स्वीकार करेगा तो व्यवहारिक रूप से क्या वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाने वाला बनेगा या नहीं। फ़रमाया- अतः मैं खोलकर कहता हूँ कि मेरी तकज़ीब (झुठलाना) कोई सरल बात नहीं। मुझे काफ़िर कहने से पहले स्वयं काफ़िर बनना पड़ेगा, मुझे बेदीन और पथभ्रष्ट कहने में देर होगी किन्तु पहले अपने भटकाव तथा दुर्भाग्य को मान लेना पड़ेगा। मुझे क़ुर्आन व हदीस को छोड़ने वाला कहने से पहले स्वयं क़ुर्आन और हदीस को छोड़ देना पड़ेगा और फिर भी वही छोड़ेगा। मैं क़ुर्आन व हदीस के द्वारा सत्यापित हूँ तथा उसका सत्यापन करने वाला हूँ। मैं पथभ्रष्ट नहीं अपितु महदी हूँ, मैं काफ़िर नहीं बल्कि अना अव्वलुल मोमिनीन का सत्यार्थ हूँ और जो कुछ मैं कहता हूँ ख़ुदा ने मुझ पर स्पष्ट किया है कि यह सच है। जिसको ख़ुदा पर विश्वास है, जो क़ुर्आन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्च मानता है उसके लिए यही प्रमाण पर्याप्त है कि मेरे मुंह से सुनकर चुप हो जाए परन्तु जो निडर और निर्भय हो उसका क्या इलाज, ख़ुदा स्वयं उसको समझाएगा।

फिर मसीह मौऊद के आगमन के सम्बंध में कुछ निशानियों का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं कि वास्तव में यह रेल गाड़ी मसीह मौऊद का एक निशान है। क़ुर्आन शरीफ़ में भी इसकी ओर संकेत है واذالعشار عطلت कि जब दस महीने की गर्भ वाली ऊँटनियाँ छोड़ दी जाएँगी। फ़रमाया- दीनदारी तक़्वा के साथ होती है, ये लोग विचार करें तो साफ़ मालूम होता है कि ليتركن القلاص में रेल की ओर संकेत है क्यूँकि यदि इसका अभिप्रायः रेल नहीं तो फिर उनका दायित्व है कि वह घटना बताएँ जिसके होने पर ऊँट को छोड़ दिया जाएगा। पहली किताबों में भी संकेत है कि मसीह के ज़माने में अवागमन सरल हो जाएगा। फ़रमाया- वास्तविकता यह है कि इतने अधिक निशान पूरे हो चुके हैं कि ये लोग तो इस मैदान से भाग ही गए हैं। जैसे कि चाँद और सूर्य ग्रहण क्या रमज़ान के महीने में उस तरीक़े पर नहीं हुआ जैसा कि महदी की निशानियों के लिए निश्चित था। इसी प्रकार अनन्त काल से ऐसी सवारी भी नहीं निकली है। फ़रमाया कि निशानियाँ प्रमाणित करती हैं कि मसीह मौऊद पैदा हो गया है। यदि ये लोग हमको नहीं मानते तो फिर किसी और को खोजें और बतलाएँ कि कौन है क्यूँकि जो निशानियाँ उसके लिए निश्चित की गई थीं वे तो सारी की सारी पूरी हो गईं। नेक नीयत और सज्जनता के साथ प्रमाणों को देखो और समझो। यदि हठ करनी है तो फिर कुछ दिखाई नहीं देगा, फिर तो क़ुर्आन-ए-करीम भी हिदायत नहीं देता। प्रत्येक सत्य को चाहने वाले का अधिकार है कि वह हमसे हमारे दावे का प्रमाण मांगे। इसके लिए हम वही पेश करते हैं जो नबियों ने पेश किया, मूल रूप से क़ुर्आन व हदीस, बौद्धिक प्रमाण अर्थात इस समय की आवश्यकताएँ फिर वे प्रमाण जो ख़ुदा तआला ने मेरे हाथ पर प्रकट किए हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- आयत इस्तिख़लाफ़ में अल्लाह तआला से स्पष्ट रूप से एक ख़िलाफ़त की श्रंखला स्थापित करने का वादा फ़रमाया है, इस श्रंखला को पहली श्रंखला के समान घोषित किया है। जैसा कि फ़रमाया- كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ. फ़रमाया कि अब इस ख़िलाफ़त के वादे के अनुसार तथा इसकी उपमा के लिए अनिवार्य था कि जैसे मूसवी ख़िलाफ़त की श्रंखला का अन्तिम ख़लीफ़ः मसीह था, आवश्यक है कि मुहम्मदी सिलसिले का ख़ातम भी एक मसीह हो। तीसरी बात यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही फ़रमाया है कि इमामुकुम मिनकुम, तुममें से तुम्हारा इमाम होगा। चौथी बात यह, आपने यह फ़रमाया कि प्रत्येक शताब्दी के सिरे पर एक मुजद्दिद को दीन के नवीनीकरण के लिए भेजा जाता है। अब इस शताब्दी का मुजद्दिद होना आवश्यक था तथा मुजद्दिद का जो काम होता है वह उक्त समय के उपद्रव के सुधार हेतु होता है। इस प्रकार जो फ़साद और उपद्रव इस समय सबसे बढ़कर है वह ईसाई उपद्रव है। इस कारण से आवश्यक है कि इस

शताब्दी का जो मुजद्दिद हो सलीब को तोड़ने वाला हो जिसका दूसरा नाम मसीह मौऊद है। पाँचवीं बात यह कि मूसवी ख़िलाफ़त की समानता के अनुसार भी अन्तिम निर्णायक ख़लीफ़ः मुहम्मदी सिलसिले का चौधवीं ही शताब्दी में होना अनिवार्य है क्यूँकि मूसा अलैहिस्सलाम के बाद चौधवीं शताब्दी में मसीह अलै. आए थे। छटी बात यह कि जो निशानियाँ मसीह मौऊद की निश्चित की गईं थीं उनमें से बहुत सी पूरी हो चुकी हैं जैसे चाँद और सूर्य ग्रहण का रमज़ान में होना, जो दो बार हो चुका, हज्ज का बन्द होना, दुमदार तारे का निकलना, प्लेग का फूटना, रेलों का चलना, ऊँटनियों का बेकार होना। सातवीं बात यह कि सूरः फ़ातिहः की दुआ से भी यही प्रमाणित होता है कि आने वाला इसी उम्मत में से होगा, अभिप्रायः यह है कि एक दो नहीं सैकड़ों प्रमाण इस बात के हैं कि आने वाला इसी उम्मत में से आना चाहिए तथा उसका यही समय है। अब ख़ुदा तआला के इलहाम और वह्यी से मैं कहता हूँ कि जो आने वाला था, वह मैं हूँ। चिरकाल से ख़ुदा तआला ने नबुव्वतों के लिए जो प्रमाण रखे हैं वे मुझसे जिस का जी चाहे ले ले। जो निशान मेरे समर्थन में प्रकट हुए हैं उनको देख लो। मुझे खेद होता जब मैं इन विरोधियों की स्थिति को देखता हूँ कि जिन बातों को निशान कहकर पेश किया करते थे अब जबकि वे पूरे हो गए तो उनकी प्रमणिकता पर आपत्तियाँ करने लगे। उदाहरणतः चाँद और सूर्य ग्रहण की निशानी माँगा करते थे, अब कहते हैं कि यह हदीस सही नहीं है, परन्तु कोई उनको पूछे कि जिसको ख़ुदा तआला ने सही प्रमाणित कर दिया क्या वह हदीस उनके कहने से झूठी हो जाएगी। खेद तो इस बात पर है कि इतना कहते हुए उनको लाज नहीं आती कि इसके द्वारा हम मसीह मौऊद को नहीं झुठलाते, रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठला रहे हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सत्य ज्ञात करने का मार्ग बतलाते हुए फ़रमाते हैं कि यदि सत्य ज्ञात करना है तो फिर ख़ुदा तआला से अपनी नमाज़ों में दुआएँ माँगें कि वह उन पर सत्य को स्पष्ट कर दे और मेरा विश्वास है कि यदि इंसान राग द्वेष से विशुद्ध होकर सत्य को प्रकट करने के लिए ख़ुदा तआला को ओर लौटेगा तो एक चिल्ला न बीतेगा कि उस पर सत्य प्रकट हो जाएगा। किन्तु बड़े ही कम लोग हैं जो इन अनुबन्धों के साथ ख़ुदा तआला से निर्णय चाहते हैं तथा इस प्रकार से अपनी कम समझी अथवा राग और द्वेष के कारण ख़ुदा के वली का इंकार करके ईमान खो देते हैं।

अल्लाह तआला मुसलमानों को बुद्धि प्रदान करे कि वे केवल मौलवियों की बातों में न आएँ बल्कि अपनी बुद्धि को उपयोग में लाएँ तथा शुद्ध होकर अल्लाह तआला से सहायता मांगें। अल्लाह तआला उनके दिल खोले और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर ये इस स्थिति से बाहर निकलें जिसमें आजकल मुसलमान दुनिया एक विचित्र अवस्था में फंसी हुई है, कोई रास्ता निकलने का उनको दिखाई नहीं दे रहा। पाकिस्तान में भी नए नए संगठन बन रहे हैं, अब एक नया संगठन बना, लब्बैक या रसूलल्लाह का, जिन्होंने मार्च किया, पहले लाहौर का घेराओ किया, फिर इस्लामाबाद का घेराओ किया। इसके बाद इसी नाम का एक अन्य संगठन है जो घेराओ कर रहा है तथा घेरा बन्दी की हुई है इस्लामाबाद की तथा कोई सरकार कोई सेना कोई नियम उनको रोक नहीं सकता। तो लब्बैक या रसूलुल्लाह कहने वाले तो वास्तव में हम अहमदी हैं जिन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात को सुना कि जब मेरा मसीह व महदी आए तो उसको मानना और उसको सलाम कहना। यह है लब्बैक कहने का सही तरीक़ा, काश कि ये लोग भी इसको समझें।

अल्लाह तआला दुनिया को भी, पाकिस्तान को भी प्रत्येक मुस्लिम देश को भी फ़ितना व फ़साद से बचाए और अल्लाह तआला मुसलमानों पर विशेष कृपा करे क्यूँकि आजकल जो परिस्थितियाँ चल रही हैं तथा जो मुस्लिम दुनिया के विरुद्ध योजना बनाई जा रही है वह बड़ी भयावह है। यदि उन्होंने अभी भी न समझा तो फिर बाद में ये पछताएँगे, अल्लाह तआला रहम करे।

TOLL FREE NO: 180030102131